B.Ed-II
Biological Science
Unit-1, Lecture-4

Nakul Sah
Asst. Professor

TOPIC - NCF.2005

विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य उसके छः वैधताओं के मापदंडो से जुड़े हुये है। ये वैधताएँ है—

संज्ञानात्मक
विषयवस्तु
प्रक्रिया
ऐतिहासिक
पर्यावरणीय
नैतिक

विज्ञान पाठ्यचर्या के उद्देश्य लोगों की जरूरतों के अनुसार निर्धारित किये जाने चाहिए। ब्रूनर एवं कॉलेट ने विज्ञान शिक्षण के बारे में कहा है कि "शालेय पाठ्यचर्या में विज्ञान अपना स्थान तभी सार्थक कर सकता है जब वह युवाओं में कुछ महत्वपूर्ण बदलाव ला सके जैसे उनके चिन्तन के तरीके में, कार्य करने की आदतों में तथा उनके पास जो है और वास्तविकता में वह जो कर रहे है उसको वह कितना मूल्य देते है"
NCF-2005 के अनुसार विज्ञान शिक्षा वह है जो विद्यार्थी को इस लायक बना दे ताकि वह—

(i) अपने संज्ञानात्मक स्तर के अनुरूप विज्ञान के तथ्यों व धारणाओं को समझने और इसे प्रयुक्त करने के काबिल हो जाये।

(ii) उन तरीकों और प्रक्रियाओं को समझ सके जिनसे वैज्ञानिक ज्ञान का सृजन किया जा सके तथा इसका वैधीकरण भी किया जा सके।

(iii) विज्ञान के ऐतिहासिक एवं विज्ञान सम्बन्धित परिप्रेक्ष्यों को समझ सके। साथ ही विज्ञान को एक सामाजिक उद्यम की तरह देख सके।

(iv) खुद को स्थानीय तथा वैश्विक परिवेश (प्रकृति, लोग, वस्तुएँ) से जोड़ सके और विज्ञान प्रौद्योगिकी और समाज के बीच की अंतः क्रिया को व तद्जन्य उपजे मुद्दों को समझ सके।

(v) रोजगार की दुनिया में पैर टिका पाने के लिए आवश्यक सैद्धांतिक और व्यावहारिक कुशलता हासिल कर सके।

(vi) अपनी स्वाभाविक जिज्ञासा, सौंदर्य बोध और रचनात्मकता से विज्ञान और प्रौद्योगिकी को परिभाषित कर सके।

(vii) ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, सहयोग, जीवन के प्रति सरोकार एवं पर्यावरण सुरक्षा जैसे मूल्यों की महत्ता को समझ सके।

(viii) "वैज्ञानिक स्वभाव" विकसित करना सीख जाये जैसे- वस्तुनिष्ठता, आलोचनात्मक सोच, भय एवं अंधविश्वास से मुक्ति।

Scanned with CamScanner